उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोदोंके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सरककर चार पर्याप्तियोंके निर्वर्तक बादर निगोद पर्यार्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें निर्वर्तक जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान जानेतक निर्वर्तक जीव विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। तब जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके सबसे जघन्य निर्लेपनके साथ बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका निर्लेपनस्थान समान होता है। उससे उपरिम समयमें चार पर्याप्तियोंके निर्वर्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उससे उपरिम समयमें चार पर्याप्तियोंके निर्वर्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार विशेष अधिक विशेष अधिकके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका यवमध्य होता है। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर विशेष हीन क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान होता है। ऐसा होता हुआ भी प्रथम त्रिभागके अन्तिम समयसे पीछे अन्तर्मुहूर्त सरककर होता है। अब बादर निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानसे प्रथम त्रिभागके उपरिम संख्यात बहुभागोंमें और सम्पूर्ण द्वितीय त्रिभागमें आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि, वहाँ आयुका बन्ध नहीं होता।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्तयाणमाउअबंधजवमज्झं।।६८५।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य होता है।।६८५।।

उप्पण्णपढमसमए आउअबंधस्स पारंभो ण होदि, णिच्छएण सगजहण्णाउअबेतिभागे (* का प्रतौ '-- वेत्तिभागे' इति पाठः।) गंतूण चेव आउअबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठमंतोमुहुत्तग्गहणं कदं। एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे। तं जहा -- उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पढमबितियभागे बोलेदूण तदियभागपढमसमए आउअबंधया सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवा थोवा। तदुवरिमसमए आउअबंधया जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण ताव

गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्ताणमाउअबंधजवमज्झट्ठाणमुप्पण्णं त्ति। तेण परं विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं चरिमआउअबंधट्ठाणं त्ति।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता है। निश्चयसे अपनी जघन्य आयुके दो त्रिभाग जाकर ही आयुका बन्ध होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अन्तर्मुहूर्त' पदका ग्रहण किया है। यहाँपर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा -- उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम और द्वितीय त्रिभागको बिताकर तीसरे त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके आयुबन्धयवमध्यस्थानके उत्पन्न होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उसके बाद अन्तर्मुहूर्त अध्वान ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके अन्तिम आयुबन्धस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं आउअबंधजवमज्झं।।६८६।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य होता है।।६८६।।

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिसगजहण्णाउअस्स बेतिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियतिभागसमयपढमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा आउअबंधवा थोवा होंता वि सुहुमणिगोदपज्जत्ततदियतिभागपढमसमयादो अंतोमुहुत्तं हेट्ठा ओसरिदूण एवमाउअबंधट्ठाणं होदि। किं कारणं? जेण बादरणिगोदो घादेण थोवमाउअं ट्ठवेदि त्ति। तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्ता आउअबंधया जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधतदियतिभागपढमसमयो त्ति। तदुवरि विसेसाहिया जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति। तदुवरि विसेसाहिया जाव बादरपज्जत्ताउअजवमज्झे त्ति। तदुवरि विसेसहीणा जाव सुहुमचरिमआउअबंधट्ठाणे त्ति। तदुवरि विसेसहीणा बादरउक्कस्साउअबंधणिल्लेवणट्ठाणे त्ति। तदुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण असंखेपद्धा (* प्रत्योः 'असंखेयद्धा' इति पाठः।) होदि। असंखेपद्धाए उवरि (* प्रत्योः 'असंखेयद्धा उवरि' इति पाठः।) अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं घादजणिदं सव्वजहण्णजीवणियट्ठाणं होदि।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर सबसे जघन्य आयुके दो तीन भागप्रमाण अध्वान जाकर तृतीय त्रिभागके तृतीय समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव सबसे थोड़े हैं। ऐसा होते हुए भी सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके तृतीय त्रिभागके प्रथम समयसे अन्तर्मुहूर्त पीछे सरककर यह आयुबन्धस्थान होता है। कारण क्या है? क्योंकि, बादर निगोद जीव घात द्वारा स्तोक आयुको शेष रखता है। उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके आयुबन्धके तीसरे त्रिभागके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म पर्याप्तके आयुबन्धयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर बादर पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर बादर पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तके अन्तिम आयुबन्ध स्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर बादर निगोद पर्याप्तके उत्कृष्ट आयुबन्ध निर्लेपनस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आसंक्षेपाद्धा होता है। आसंक्षेपाद्धासे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्तकों व सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंका घातसे उत्पन्न हुआ सबसे जघन्य जीवनीय स्थान होता है।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं।।६८७।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तक जीवोंका मरण यवमध्य होता है।।६८७।।

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं सव्वजहण्णघादखुद्दाभवग्गहणमेत्तमुवरि गंतूण सव्वजहण्ण-जीवणियकालचरिमसमए मरंता सुहुमजीवा थोवा। तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमणिगोदमरणजवमज्झं त्ति। तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवेण बद्धजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणे त्ति।

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर सबसे जघन्य घात क्षुल्लकभवग्रहणका अन्तर्मुहूर्त जाकर सबसे जघन्य जीवनीय कालके अन्तिम समयमें मरनेवाले सूक्ष्म पर्याप्त जीव स्तोक हैं। उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद मरण

यवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोदपर्याप्त जीव द्वारा बद्ध जघन्य आयुनिर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं।।६८८।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है।।६८८।।

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि घादेदूण ट्ठविदसव्वजहण्णजीवणियकाल(* ता प्रतौ '-जीवणि (का)य काल', का प्रतौ '- जीवणिकायकाल-' इति पाठः।)मेत्तमुवरि गंतूण तस्स चरिमसमए मरंता बादरणिगोदपज्जत्ता जीवा थोवा। तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव (* ता प्रतौ 'होदूण जाव' इति पाठः।) सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झपढमसमओ त्ति। तेण परं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमपज्जत्तमरणजवमज्झं त्ति। तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण मरंति जाव (* ता प्रतौ 'विसेसाहिया विसेसाहिया' इति पाठः।) बादरपज्जत्तमरणजवमज्झं त्ति। तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति। तेण परं विसेसहीणा जाव बादरपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर घात करके स्थापित किये गये सबसे जघन्य जीवनीय कालमात्र ऊपर जाकर उसके अन्तिम समयमें मरनेवाले बादर निगोद पर्यन्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं। उससे आगे सूक्ष्म पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं। उसके बाद बादर पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं। उसके बाद सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जीव जाते हैं। उसके बाद बादर निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जीव जाते हैं।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्तयाणं विल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।।६८९।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं।।६८९।। उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तुवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि। तमेगं णिल्लेवणट्ठाणं। एदम्हादो समउत्तराउअं बिदियणिल्लेवणट्ठाणं। एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि लब्भंति। तत्थेव सुहुमणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है। वह एक निर्लेपनस्थान है। इससे एक समय अधिक आयु दूसरा निर्लेपनस्थान है। इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रममें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं। वहींपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि।।६९०।। उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं।।६९०।।

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि। तमेगं णिल्लेवणट्ठाणं समउत्तरपबद्धे बिदियं णिल्लेवणट्ठाणं। एवं बिसमउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं उक्कस्साउअणिल्लेवणट्ठाणं होदि। तत्थेव बादरणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है। वह एक निर्लेपनस्थान है। एक समय अधिक आयुका बन्ध होनेपर दूसरा निर्लेपनस्थान होता है। इस प्रकार दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट आयु निर्लेपनस्थान होता है। तथा वहींपर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है, ऐसा यहाँपर ग्रहण करना चाहिए।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।।६९१।।

वहींपर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।।६९१।।

तम्हि चेवे त्ति णिद्देसो किमट्ठं कीरदे? बादरणिगोदाणमाधारभूदपत्तेयसरीरपमत्तजीवग्गहणट्ठं। बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमुक्कस्सआउअस्स वि पमाणमंतोमुहुत्तं चेवेत्ति गुरूवदेसादो। उप्पण्णसमयप्पहुडि बंधेण सव्वजहण्णाउअमेत्तमद्धाणं गंतूण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स एयमाउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तआउअणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बंधेण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स बादरणिगोदपदिट्ठिदस्स उक्कस्साउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। एदेसिं णिल्लेवणट्ठाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं आगदं ।

शंका -- 'तम्हि चेव' ऐसा निर्देश किसलिए आया है?

समाधान -- बादर निगोदोंके आधारभूत प्रत्येक शरीर पर्याप्तकोंके ग्रहण करनेके लिए उक्त निर्देश किया है, क्योंकि, बादर निगोद प्रतिष्ठितोंकी उत्कृष्ट आयुका प्रमाण भी अन्तर्मुहूर्त ही है ऐसा गुरुका उपदेश है।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बन्धसे प्राप्त सबसे जघन्य आयुमात्र अध्वान जाकर प्रत्येकशरीर पर्याप्तका एक आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है। इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आयुनिर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बन्धसे बादर निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येकशरीर पर्याप्तका उत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है। इन निर्लेपनस्थानोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगे सूत्र आया है --

एत्थ अप्पाबहुगं -- सव्वत्थोवाणि सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि ।।६९२।।

यहाँपर अल्पबहुत्व -- सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान सबसे थोड़े हैं ।।६९२।।

कुदो? आवलियाए असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो।

क्योंकि, वे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि।।६९३।।

बादरनिगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं।।६९३।।

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहिं।

कितने अधिक हैं? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंसे अधिक हैं।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि।।६९४।।

वहींपर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं।।६९४।।

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहिं।

कितने अधिक हैं? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंसे अधिक हैं।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि हवंति।।६९५।।

वहाँ सर्वप्रथम ये आवश्यक होते हैं।।६९५।।

एवमेइंदियाणमावासयाणि भणिऊण संपहि एइंदियाणं पंचिंदियाणं च आवासयपरूवणट्ठमिदं सुत्तमागयं --

इस प्रकार एकेन्द्रियोंके आवश्यकोंका कथन करके अब एकेन्द्रियों और पंचेन्द्रियोंके आवश्यकोंका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है --

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिलाजवमज्झ।।६९६।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य होता।।६९६।।

अणादियसिद्धांतपदमस्सिदूण आउअबंधजवमज्झस्स समिलाजवमज्झं त्ति समणा।

अनादिसिद्धान्तपदका आश्रय लेकर आयुबन्धयवमध्यकी शमिलायवमध्य यह संज्ञा है।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिलाजवमज्झं।।६९७।।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादरनिगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य होता है।।६९७।।

एत्थ वि पुव्वं व आउअबंधजवमज्झस्स गहणं कायव्वं। एदस्स सुत्तस्स पच्छारंभो किमट्ठं कदो? पुव्विलजवमज्झादो उवरिं गंतूण एदं जवमज्झं समत्तं त्ति जाणावणट्ठं कदो।

यहाँपर भी पहलेके समान आयुबन्धयवमध्यका ग्रहण करना चाहिए।

शंका -- इस सूत्रका बादमें आरम्भ किसलिए किया है?

समाधान -- पहलेके यवमध्यके ऊपर जाकर यह यवमध्य समाप्त होता है इस बातका ज्ञ ाान करानेके लिए बादमें इस सूत्रका आरम्भ किया है।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती।।६९८।। उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है।।६९८।।

एवं भणिदे बंधेण सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्णाउअं घेत्तव्वं, अण्णस्स असंभवादो।

ऐसा कहनेपर बन्धसे प्राप्त सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकी जघन्य आयु लेनी चाहिए। क्योंकि, अन्यकी आयु लेना असम्भव है।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण समुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती।।६९९।।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर समुच्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है।।६९९।।

एवं भणिदे उप्पण्णसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमद्धाणमुवरि गंतूण पंचिंदियसमुच्छिमस्स बंधेण जहण्णाउअं घेत्तव्वं।

ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहुर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छिमकी बन्धसे प्राप्त जघन्य आयु लेनी चाहिए।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती।।७००।।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है।।७००।।

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण बंधेण गब्भोवक्कंतियस्स पज्जत्तयस्स (* का प्रतौ सूत्रानन्तरं 'एवं भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण पंचिंदियसमुच्छिमस्स बंधेण गब्भोवक्कंतियस्स जत्तयस्स' इति पाठः।) जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि। समुच्छिमजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीदो एसा उवरि होदि त्ति भणिदं होदि।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान ऊपर जाकर बन्धसे गर्भोपक्रान्त पर्याप्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है। सम्मूर्च्छिमकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे यह आगे चलकर होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

तदो दसवाससहस्साणि गंतूण ओववादियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती।।७०१।।

फिर दस हजार वर्ष जाकर औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।।७०१।।

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयादो त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा दसवाससहस्साणुववत्तीदो। ओववादिया त्ति वुत्ते देव-णेरइयाणं गहणं कायव्वं।

'तदो' ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर यह अर्थ लेना चाहिए, अन्यथा दस हजार वर्ष नहीं बन सकते हैं। 'ओववादिया' ऐसा कहनेपर देवों और नारकियोंका ग्रहण करना चाहिए।

तदो बावीसवाससहस्साणि गंतूण एइंदियस्स उक्कस्सा पज्जत्तणिव्वत्ती।।७०२।।

फिर बाईस हजार वर्ष जाकर एकेन्द्रिय जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।।७०२।।

एइंदियस्स बंधेण जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि। पुणो एदिस्से उवरिमउत्तरादिकमेण सुहुम-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि समुच्छिम-गब्भोवक्कंतिय-ओववादियसव्वजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीओ च बोलेऊण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयस्स बावीसवाससहस्समेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि।

एकेन्द्रियकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है। पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंको तथा समुच्छिम, गर्भोपक्रान्त और औपपादिकोंके सबसे जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तियोंको बिताकर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तककी बन्धकी अपेक्षा बाईस हजार वर्षप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है।

तदो पुव्वकोडिं गंतूण समुच्छिमस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।।७०३।।

फिर पूर्वकोटि जाकर सम्मर्च्छिम जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है।।७०३।।

समुच्छिमपंचिंदियपज्जत्तयस्स बंधेण जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि।

पुणो तिस्से उवरि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण बावीसवस्ससहस्साणि बोलेदूण समुच्छिमपंचिंदियपज्जत्तयस्स पुव्वकोडिमेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि।

सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है। पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक, दो समय अधिक आदिके क्रमसे बाईस हजार वर्ष बिताकर आगे सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा पूर्वकोटिप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।

तदो तिण्णि पलिदोवमाणि गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती।।७०४।।

फिर तीन पल्य जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।।७०४।।

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया। पुणो तिस्से उवरि समउत्तरादिकमेण पुव्वकोडिं बोलेदूण तिण्णि पलिदोवमेत्ता गब्भोवक्कंतियस्स बंधेण उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि।

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है। पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे पूर्वकोटिप्रमाण बिताकर गर्भोपक्रान्त जीवकी बन्धकी अपेक्षा तीन पल्यप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।

तदो तेत्तीसं सागरोवमाणि गंतूण ओववादियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती।।७०५।।

फिर तैंतीस सागर जाकर औपपादिक जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।।७०५।।

ओववादियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती दसवाससहस्समेत्ता। तिस्से उवरि समउत्तरादिकमेण तिण्णि पलिदोवमाणि बोलेदूण ओववादियाणं तेत्तीससागरोवममेत्तो उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि। एसा सव्वा वि परूवणा च परूवेयव्वा, सोलसवदिए महादंडए जहण्णट्ठिदि-उक्कस्सट्ठिदि(*ता प्रतौ 'जहण्णट्ठिदि-(उक्कस्सट्ठिदि) उक्कस्सट्ठिदि--' इति पाठः।)विसेसेसु परूविज्जमाणेसु परूविदत्तादो। ण एस दोसो, बादर-सुहुमणिगोदाणं जहण्णाउअप्पहुडि (* ता प्रतौ '-- णिगोदाणं (जहण्ण) जहण्णाउप्पहुडि', का प्रतौ 'णिगोदाणं जहण्णं जहण्णाउप्पहुडि' इति पाठः।) जाव तेसिं उक्कस्साउए त्ति ताव तत्थेव मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिट्ठाणजवमज्झाणि होंति। अण्णस्स ण होंति त्ति परूविदे तेसिमण्णेसिमाउअवियप्पाणं संभालणट्ठमिदरेसिमाउआणं पमाणपरूवणाकरणादो। एवं 'जत्थेय मरइ जीवो' एदस्स गाहाए अत्थपरूवणा समत्ता। औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति दस हजार वर्षप्रमाण है। उसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पल्य बिताकर औपपादिक जीवोंकी तैंतीस सागरप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है।

शंका -- यह सब प्ररूपणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, सोलहपदिक महादंडकमें जघन्य स्थिति और उत्कृष्ट स्थितिविशेषका कथन करनेपर कथन हो ही जाता है।

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बादर निगोद और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य आयुसे लेकर उनकी उत्कृष्ट आयुके प्राप्त होने तक वहींपर मरणयवमध्य,

आयुबन्धयवमध्य और निर्वृत्तिस्थानयवमध्य होते हैं। अन्यके नहीं होते हैं ऐसा कथन करनेपर उन अन्य जीवोंके आयुविकल्पोंकी सम्हाल करनेके लिए इतर जीवोंकी आयुके प्रमाणका कथन किया है।

इस प्रकार 'जत्थेय मरइ जीवो' इस गाथाकी अर्थप्ररूपणा समाप्त हुई।

पुव्वं तेवीसवग्गणाओ परूविदाओ। तत्थ इमाओ गहणपाओग्गाओ इमाओ च अग्गहणपाओग्गाओ त्ति परूवणा कदा। संपहि इमाओ पंचण्हं सरीराणं गेज्झाओ इमाओ च अगेज्झाओ त्ति जाणावेंतो भूदबलिभडारओ उत्तरसुत्तकलावं परूवेदि -- पहले तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका कथन कर आये हैं। उनमें ये ग्रहणप्रायोग्य हैं और ये अग्रहणप्रायोग्य हैं यह प्ररूपणा की ही है। अब ये पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य हैं और ये ग्रहणयोग्य नहीं हैं ऐसा जानते हुए भूतबलि भट्टारक उत्तरसूत्रकलापका कथन करते हैं --

तस्सेव बंधणिज्जस्स तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्दाराणि णायव्वाणि भवंति -- वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूपणा पदेसट्ठदा अप्पाबहुए त्ति।।७०६।।

उसी बन्धनीयके वहाँ ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं -- वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व।।७०६।।

एदाणि चत्तारि चेव अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो।

यहाँपर ये चारही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अनुयोगद्वार यहाँपर सम्भव नहीं हैं।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसिया परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम।।७०७।।

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा है।।७०७।।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम।।७०८।।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा है।।७०८।।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छपदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम।।७०९।।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पंचप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा होती है।।७०९।।

तासिमणंताणंतपदेसिय(* ता प्रतौ 'तासिमणंतपदेसिय--' इति पाठः।)परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाण-मुवरिमाहारसरीरदव्ववग्गणा णाम।।७१०।।

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर आहारशरीरद्रव्यवर्गणा होती है।।७१०।।

आहारसरीरदव्ववग्गणाणमुवरिमग्गहणदव्ववग्गणा णाम।।७११।।

आहारशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है।।७११।।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेजादव्ववग्गणा णाम।।७१२।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा होती है।।७१२।।

तेजादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम।।७१३।।

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है।।७१३।।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम।।७१६।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा होती है।।७१६।।

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम।।७१७।।

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है।।७१७।।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम।।७१८।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मण द्रव्यवर्गणा होती है।।७१८।।

एवमुवरिमसुत्ताणं पि सव्वेसिमुच्चारणा कायव्वा। पुणो एदेसिमत्थे भण्णमाणे जहा अब्भंतरवग्गणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं। एदेसिं सव्वेहिम्मि सुत्तेहि (* ता प्रतौ 'सव्वेहि सुत्तेहिं' इति पाठः।) पुव्वुत्तवग्गणाणं चेव संभालणं कदं। कुदो? पुव्वं परूविदस्सेव परूवणादो।

।। एवं वग्गणपरूवणा गदा।।

इसी प्रकार आगेके सभी सूत्रोंकी भी उच्चारणा करनी चाहिए। पुनः इसके अर्थका कथन करते समय जिस प्रकार आभ्यन्तर वर्गणामें कथन किया है उस प्रकार कथन करना चाहिए। इन सब सूत्रोंके द्वारा पूर्वोक्त वर्गणाओंकी ही सम्हाल की गयी है, क्योंकि, इन द्वारा पहले कहे गये अर्थका ही कथन किया गया है।

।। इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।।

वग्गणणिरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ? (* ता प्रतौ 'किमगहणपाओग्गाओ' इत्यग्रे 'णाम' इत्यधिकः पाठः।)।।७१९।।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य है या अग्रहणप्रायोग्य है? ।।७१९।।

पंचण्णं सरीराणं जा गेज्झा सा गहणपाओग्गा णाम। जा पुण तासिमगेज्झा (सा) अगहणपाओग्गा णाम। तासिं दोण्णं मज्झे कत्थ इमा पददि त्ति पुच्छा कदा। एयपदेसियवग्गणा एक्का चेव, तत्थ कथं गहणपाओग्गो त्ति बहुवयणणिद्देसो जुज्जदे (* का प्रतौ 'तत्थ गहणपाओग्गाओ त्ति बहुवयणणिद्देसो (ण--) जुज्जदे' इति पाठः।)? ण, जादिदुवारेण एयत्तमावण्णाए वत्तिभेदेण (* ता प्रतौ 'एयत्तमावण्णाए वं (वे)तिभेदेण' इति पाठः।) जणिदबहुत्तं पडि बहुवयणणिद्देसुववत्तीदो।

पाँच शरीरोंके जो ग्रहणप्रायोग्य हैं वह ग्रहणयोग्य कहलाती हैं। परन्तु जो उनके ग्रहणयोग्य नहीं है वह अग्रहणप्रायोग्य कहलाती है। उन दोनोंके मध्य इसका समावेश किसमें होता है? इस प्रकारकी पृच्छा इस सूत्रमें की गयी है।

शंका -- एकप्रदेशी वर्गणा एक ही है। वहाँ 'गहणपाओग्गाओ' इस प्रकार बहुवचनका निर्देश नहीं बन सकता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जातिकी अपेक्षा वह एक है, फिर भी व्यक्तिभेदसे वह बहुत्वको प्राप्त है, इसलिए बहुवचन निर्देश बन जाता है।

अगहणपाओग्गाओ इमाओ एयपदेसियसव्वपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाओ।।७२०।।

ये सब एकप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणाएँ अग्रहणप्रायोग्य हैं।।७२०।।

पंचण्णं सरीराणं गहणपाओग्गाओ ण होंति हत्थिहत्थस्स सरिसओ व्व। कुदो? साभावियादो।

जिस प्रकार हाथीके हाथसे सरसों ग्रहणयोग्य नहीं होता है उसी प्रकार ये पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ? ।।७२१।।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं?।।७२१।।

सुगममेदं पुच्छासुत्तं?

यह पृच्छासूत्र सुगम है।

अगहणपाओग्गाओ।।७२२।।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं।।७२२।।

एदं पि सुगमं।

यह सूत्र भी सुगम है।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छपदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ?।।७२३।।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पंचप्रदेशी, षट्‌प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती है या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती है? ।।७२३।।

सुगममेदं।

यह सूत्र सुगम है।

अगहणपाओग्गाओ।।७२४।।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं।।७२४।।

एदं पि सुगमं।

यह सूत्र भी सुगम है।

अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ? ।।७२५।।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती है या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती है?।।७२५।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

काओ चि गहणपाओग्गाओ काओ चि अगहण(* का प्रतौ 'काओ वे गहणपाओग्गाओ काओ वे अगहण--' इति पाठः।) ।।७२६।।

कोई ग्रहणप्रायोग्य होती हैं और कोई अग्रहणप्रायोग्य होती हैं।।७२६।।

आहारवग्गणाए जहण्णवग्गणप्पहुडि जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ अणंताणंतपदेसिय-वग्गणाओ त्ति एत्थ सुत्ते घेत्तव्वाओ। तत्थ आहार-तेज-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाओ गहणपाओग्गाओ अवसेसाओ अग्गहणपाओग्गाओ त्ति घेत्तव्वं। आहारवर्गणाकी जघन्य वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक ये सब अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाएँ हैं, इस प्रकार यहाँ सूत्रमें ग्रहण करना चाहिए। उनमेंसे आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा ये ग्रहणप्रायोग्य हैं, अवशेष अग्रहणप्रायोग्य हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

तासिमणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमाहारदव्ववग्गणा णाम।।७२७।।

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाके ऊपर जो होती है उसकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७२७।।

उवरि त्ति वुत्ते मज्झे इदि घेत्तव्वं, अण्णहा हेट्ठिमअणंताणंतपदेसियवग्गणाणमुवरि आहारवग्गणा होंति त्ति घेत्तव्वं। एदेण सुत्तेण आहारवग्गणा एदेण सरूवेण परिणमदि त्ति जाणावेंतेण तदवट्ठाणपदेसपरूवणा कदा।

ऊपर ऐसा कहनेपर मध्यमें ऐसा ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा ऊपरपना नहीं बन सकता है। अथवा अधस्तन अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाओंके ऊपर आहारवर्गणा होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस सूत्रद्वारा आहारवर्गणा इस रूपसे परिणत होती है ऐसा जानते हुए उसके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है।

आहारदव्ववग्गणा णाम का? ।।७२८।।

आहारद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७२८।।

केण लक्खणेण जाणिज्जदि, किं वा तत्तो णिप्पज्जमाणमिदि एदेण (* ता प्रतौ 'णिप्फज्जमाणइजित (णिप्पज्जमाणमिदि) एदेण', का प्रतौ 'णिप्फज्जमाणइज्जते एदेण' इति पाठः।) सुत्तेण पुच्छा कदा।

वह किस लक्षणसे जानी जाती है? अथवा उससे क्या निष्पन्न होता है? इस प्रकार इस सूत्रद्वारा पृच्छा की गयी है।

आहारदव्ववग्गणं तिण्णं सरीराणं गहणं पवत्तदि।।७२९।।

आहारद्रव्यवर्गणा तीन शरीरोंके ग्रहणके लिए प्रवृत्त होती है।।७२९।।

जिस्से परमाणुपोग्गलक्खंधे घेत्तूण तिण्णं सरीराणं गहणं णिप्पत्ती पवत्तदि (* ता प्रतौ 'गहणं णिव्वत्ती पवत्तदि', का प्रतौ 'गहणणिप्फत्ती पवत्तदि' इति पाठः।) होदि सा आहारदव्ववग्गणा णाम। तिण्णं सरीराणं णामणिद्देसट्ठं गहणसरूवपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि --

जिसके परमाणुपुद्‌गलस्कन्धको ग्रहण कर तीन शरीरोंका ग्रहण अर्थात् निष्पत्ति होती है वह आहारद्रव्यवर्गणा है। अब तीन शरीरोंके नामोंका निर्देश करनेके लिए और ग्रहणके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जाणि दव्वाणि घेत्तूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए परिणामेदूण (*का प्रतौ 'परिणमिदूण' इति पाठः।) परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम।।७३०।। औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके जिन द्रव्योंको ग्रहण कर औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीररूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७३०।।

आहारसरीरवग्गणाए अंतो काओ चि वग्गणाओ ओरालियसरीरपाओग्गाओ वेउव्वियसरीरपाओग्गाओ काओ चि आहारसरीरपाओग्गाओ। एवमाहारसरीरवग्गणा तिविहा होदि। एदिस्से तिविहत्तं कुदो णव्वदे? उवरिभण्णमाणओगाहणप्पाबहुगादो कज्जभेदण्णहाणुववत्तीदो वा। जाणि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण पाविऊण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं सरूवेण ताणि परिणामेदूण परिणमाविय जेहि सह परिणमंति बंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम। जदि एदेसिं तिण्णं सरीराणं वग्गणाओ ओगाहणाभेदेण संखाभेदेण च भिण्णाओ तो आहारदव्ववग्गणा एक्का चेवे त्ति किमट्ठं वुच्चदे? ण, अगहणवग्गणाहि अंतराभावं पडुच्च तासिमेगत्तुवएसादो। ण च संखाभेदो असिद्धो, उवरिभण्णमाणअप्पाबहुएणेव तस्स सिद्धीदो।

आहारशरीर वर्गणाके भीतर कुछ वर्गणाएँ औदारिक शरीरके योग्य हैं। कुछ वर्गणाए वैक्रियिक शरीरके योग्य हैं और कुछ वर्गणाएँ आहारक शरीरके योग्य हैं। इस प्रकार आहारशरीर वर्गणा तीन प्रकारकी है।

शंका -- यह तीन प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- आगे कहे जानेवाले अवगाहना अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। अथवा अन्यथा कार्यभेद नहीं बन सकता है, इससे जाना जाता है कि वह तीन प्रकारकी है।

जो औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरके योग्य द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर अर्थात् प्राप्त कर औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीररूपसे अर्थात् औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरके आकारसे उन्हें परिणमाकर जिनके साथ जीव परिणमन करते हैं अर्थात् बन्धको प्राप्त होते हैं उन द्रव्योंको आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।

शंका -- यदि तीन शरीरोंकी वर्गणाएँ अवगाहनाके भेदसे और संख्याके भेदसे अलग अलग हैं तो आहारद्रव्यवर्गणा एक ही है ऐसा किसलिए कहते हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अग्रहणवर्गणाओंके द्वारा अन्तरके अभावकी अपेक्षा इन वर्गणाओंके एकत्वका उपदेश दिया गया है। और संख्याभेद असिद्ध नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे ही उसकी सिद्धि होती है।

आहारदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम।।७३१।।

आहारद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है।।७३१।।

एदेण अगहणवग्गणावट्ठाणपदेसो परूविदो।

इस सूत्र द्वारा अग्रहणद्रव्यवर्गणाके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है।

अगहणदव्ववग्गणा णाम का? ।।७३२।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७३२।।

किंलक्खणेणेत्ति भणिदं होदि।

क्या लक्षणवाली है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

अगहणदव्ववग्गणा आहारदव्वमधिच्छिदा (* ता प्रतौ '-- मच्छिदा' इति पाठः।) तेयादव्ववग्गणं ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम।।७३३।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा आहारद्रव्यसे प्रारम्भ होकर तैजसद्रव्यवर्गणाको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसको अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७३३।।

आहारदव्वमधिच्छिदा एदेण (* ता प्रतौ '-- मधिच्छिदा (ए) एदेण' इति पाठः।) तिण्णं सरीराणमप्पाओग्गत्तं आहारदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणादो वि अगहणजहण्णवग्गणाए रूवाहियत्तं परूविदं। तेयादव्ववग्गणं ण पावदि एदेण तेया-भास-मण-कम्माणमप्पाओगत्तं तेजाजहण्णवग्गणादो एदिस्से उक्कस्सवग्गणाए रूवूणत्तं च परूविदं (* ता प्रतौ 'अपरूविदं' इति पाठः।)। ताणं दव्वाणमंतरे एदासिं दोण्णं वग्गणाणं विच्चाले अगहणदव्ववग्गणा णाम। एदेण ट्ठिदपदेसपरूवणा कदा।

'आहारदव्वमधिच्छिदा' इस वचन द्वारा अग्रहणवर्गणा तीन शरीरोंके अयोग्य है और आहारद्रव्यवर्गणाकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणासे भी जघन्य अग्रहण वर्गणा एक प्रदेश अधिक है यह कहा गया है। 'तेयादव्ववग्गणं ण पावदि' इस वचन द्वारा यह तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणाके अयोग्य और जघन्य तैजस वर्गणासे यह उत्कृष्ट वर्गणा एक प्रदेश न्यून है यह कहा गया है। 'ताणं दव्वाणं अंतरे' अर्थात् उन दोनों वर्गणाओंके बीच में अग्रहणद्रव्यवर्गणा है। इस द्वारा उसके स्थित होनेके प्रदेशका कथन किया गया है।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्ववग्गणा णाम।।७३४।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा है।।७३४।।

एदेण सुत्तेण तेयादव्ववग्गणाए पमाणं परूविदं। इस सूत्र द्वारा तैजस द्रव्यवर्गणाका प्रमाण कहा गया है।

तेयादव्ववग्गणा णाम का? ।।७३५।।

तैजसद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७३५।।

सुगममेदं पुच्छासुत्तं।

यह पृच्छासूत्र सुगम है।

तेयादव्ववग्गणा तेयासरीरस्स गहणं पवत्तदि।।७३६।।

तैजसद्रव्यवर्गणासे तैजसशरीरका ग्रहण होता है।।७३६।।

तेजासरीरस्स तेयासरीरट्ठं गहणं जत्तो पवत्तदि (* का प्रतौ 'पवत्तीदि' इति पाठः।) सा तेजादव्ववग्गणा त्ति भण्णदि। एदस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

'तेयासरीरस्स' अर्थात् तैजसशरीरके लिए ग्रहण जिससे होता है वह तैजस वर्गणा कही जाती है। अब इसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

जाणि दव्वाणि घेत्तूण तेयासरीरत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि तेयासरीरवग्गणा णाम।।७३७।।

जिन द्रव्योंको ग्रहण कर तैजसशरीररूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी तैजस द्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७३७।। जाणि दव्वाणि घेत्तूण पाविदूण तेजासरीरत्ताए तेजासरीरसरूवेण परिणामेदूण मिच्छादिपच्चएहिं परिणमाविय परिणमंति संबंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि तेजा दव्ववग्गणा णाम।

जिन द्रव्योंको ग्रहण कर अर्थात् प्राप्त कर तैजसशरीररूपसे 'परिणामेदूण' अर्थात् मिथ्यात्व आदि कारणोंसे परिणमाकर जीव 'परिणमंति' अर्थात् सम्बन्धको प्राप्त होते हैं वे तैजस द्रव्यवर्गणा कहलाते हैं।

तेजादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम।।७३८।।

तैजस द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है।।७३८।।

अगहणदव्ववग्गणा णाम का।।७३९।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७३९।।

अगहणदव्ववग्गणा तेजादव्वमविच्छिदा भासादव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम।।७४०।। अग्रहणद्रव्यवर्गणा तैजसद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर भाषाद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनोंके द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।

सुगममेदं सुत्ततियं।

ये तीन सूत्र सुगम हैं।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम।।७४१।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७४१।।

भासादव्ववग्गणा णाम का?।।७४२।।

भाषाद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७४२।।

सुगममेदं सुत्तदुअं।

ये दो सूत्र सुगम हैं।

भासादव्ववग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं पवत्तदि।।७४३।।

भाषाद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है।।७४३।।

जा वग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं होदूण पवत्तदि सा भासादव्ववग्गणा होदि। एदस्स णिण्णयत्थमुत्तरसुत्तं भणदि --

जो वर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है वह भाषाद्रव्यवर्गणा है। अब इसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

सच्चभासाए मोसभासाए सच्चमोसभासाए असच्चमोसभासाए जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चभासत्ताए मोसभासत्ताए सच्चमोसभासत्ताए असच्चमोसभासत्ताए परिणामेदूण णिस्सारंति जीवा ताणि दव्वाणि भासादव्ववग्गणा णाम।।७४४।।

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा, असत्यमोषभाषाके जिन द्रव्योंको ग्रहण कर सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणमाकर जीव उन्हें निकालते हैं उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७४४।।

भासादव्ववग्गणा सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेदेण चउव्विहा। एवं चउव्विहत्तं कुदो (* ता प्रतौ 'चउव्विहा। तं चउव्विहत्तं कुदो' इति पाठः।) णव्वदे? चउव्विह(* ता प्रतौ 'णव्वदे तचउव्विह--' इति पाठः।)भासाकज्जण्णहाणुववत्तीदो। चउव्विहभासाणं पाओग्गाणि जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभासाणं सरूवेण तालुवादिवावारेण परणमाविय जीवा मुहादो णिस्सारेंति ताणि दव्वाणि भासादव्ववग्गणा णाम।

भाषाद्रव्यवर्गणा सत्य, मोष, सत्यमोष और असत्यमोषके भेदसे चार प्रकारकी है।

शंका -- यह चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- उसका चार प्रकारका भाषारूप कार्य अन्यथा नहीं बन सकता है, इससे जाना जाता है कि वह चार प्रकारकी है।

चार प्रकारकी भाषाके योग्य जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर तालु आदिके व्यापार द्वारा सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषा रूपसे परिणमाकर जीव मुखसे निकलते हैं, अतएव उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।

भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम।।७४५।।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७४५।।

अगहणदव्ववग्गणा भासादव्वमधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे (*ता प्रतौ 'ताणि (णं) दव्वाणमंतरे', का प्रतौ 'ताणि दव्वाणमंतरे' इति पाठः।) अगहणदव्ववग्गणा णाम।।७४७।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा भाषाद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर मनोद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः उन द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७४७।।

सुगममेदं सुत्ततियं।

ये तीन सूत्र सुगम हैं।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम।।७४८।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७४८।।

मणदव्ववग्गणा णाम का?।।७४९।।

मनोद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७४९।।

मणदव्ववग्गणा चउव्विहस्स (* का प्रतौ '-- वग्गणाए चउवहस्स' इति पाठः।) मणस्स गहणं पवत्तदि।।७५०।।

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारके मनरूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है।।७५०।।

एदाणि वि सुगमाणि।

ये सूत्र भी सुगम हैं।

सच्चमणस्स मोसमणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए असच्चमोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि मणदव्ववग्गणा णाम।।७५१।।

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनके जिन द्रव्योंको ग्रहण कर सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७५१।।

मणदव्ववग्गणा चउव्विहा -- सच्चमणपाओग्गा मोसमणपाओग्गा सच्चमोसमणपाओग्गा असच्चमोसमणपाओग्गा चेदि। मणदव्ववग्गणाए चउव्विहत्तं कुदो णव्वदे? मणदव्ववग्गणादो णिप्पज्जमाणदव्वमणस्स चउव्विहभावण्णहाणुववत्तीदो। सेसं सुगमं।

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है -- सत्यमनप्रायोग्य, असत्यमनप्रायोग्य, सत्यमोषमनप्रायोग्य और असत्यमोषमनप्रायोग्य।

शंका -- मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- मनोद्रव्यवर्गणासे उत्पन्न होनेवाला द्रव्यमन चार प्रकारका अन्यथा नहीं बन सकता है, इससे जाना जाता है कि मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी होती है।

शेष कथन सुगम है।

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम।।७५२।।

मनोद्रव्यवर्गणाके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है।।७५२।।

अगहणदव्ववग्गणा णाम का? ।।७५३।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७५३।।

अगहणदव्ववग्गणा मणदव्वमविच्छिदा (* का प्रतौ '-- मधिच्छिदा' इति पाठः।) कम्मइयदव्वं ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम।।७५४।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा मनोद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर कार्मणद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७५४।।

एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि।

ये सूत्र भी सुगम हैं।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम।।७५५।।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाके ऊपर कार्मणद्रव्यवर्गणा होती है।।७५५।।

कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का? ।।७५६।।

कार्मणद्रव्यवर्गणा क्या है?।।७५६।।

कम्मइयदव्ववग्गणा अट्ठविहस्स कम्मस्स गहणं पवत्तदि।।७५७।।

कार्मणद्रव्यवर्गणा आठ प्रकारके कर्मका ग्रहण कर प्रवृत्त होती है।।७५७।।

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि। एदेसिं सुत्ताणं णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

ये सूत्र सुगम हैं। अब इन सूत्रोंका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

णाणावरणीयस्स दंस णावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण णाणावरणीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेयणीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम।।७५८।।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर ज्ञानावरणरूपसे, दर्शनावरणरूपसे, वेदनीयरूपसे, मोहनीयरूपसे, आयुरूपसे, नामरूपसे, गोत्ररूपसे और अन्तरायरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं, अतः उन द्रव्योंकी कार्मणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।।७५८।।

णाणावरणीयस्स जाणि पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि चेव मिच्छत्तादिपच्चएहि पंचणाणावरणीयसरूवेण परिणमंति ण अण्णेसिं सरूवेण। कुदो? अप्पाओग्गत्तादो। एवं सव्वेसिं कम्माणं वत्तव्वं, अण्णहा णाणावरणीयस्स जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण मिच्छादिपच्चएहि णाणावरणीयत्ताए परिणामेदूण जीवा परिणमंति त्ति सुत्ताणुववत्तीदो। जदि एवं तो कम्मइयवग्गणाओ अट्ठे त्ति किण्ण परूविदाओ? ण, अंतराभावेण तथोवदेसाभावादो। एदाओ अट्ठ वि वग्गणाओ किं पुध पुध अच्छंति आहो करंबियाओ त्ति? पुध पुध ण अच्छंति किंतु करंबियाओ। कुदो एदं णव्वदे? 'आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ' एदीए गाहाए णव्वदे। सेसं जाणिदूण वत्तव्वं।

।। एवं वग्गणणिरूवणा समत्ता।।

ज्ञानावरणीयके योग्य जो द्रव्य हैं वे ही मिथ्यात्व आदि प्रत्ययोंके कारण पाँच

ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमन करते हैं, अन्यरूपसे वे परिणमन नहीं करते, क्योंकि, वे अन्यके अयोग्य होते हैं। इसी प्रकार सब कर्मोंके विषयमें कहना चाहिए, अन्यथा ज्ञानावरणीयके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर मिथ्यात्व आदि प्रत्ययवश ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं, यह सूत्र नहीं बन सकता है।

शंका -- यदि ऐसा है तो कार्मणवर्गणाएँ आठ हैं ऐसा कथन क्यों नहीं किया है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अन्तरका अभाव होनेसे` उस प्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता।

शंका -- ये आठ ही वर्गणाएँ क्या पृथक् पृथक् रहती हैं या मिश्रित होकर रहती हैं?

समाधान -- पृथक् पृथक् नहीं रहती है, किन्तु मिश्रित होकर रहती हैं।

शंका -- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- 'आयु कर्मका भाग स्तोक है। नाम कर्मका और गोत्र कर्मका भाग उससे अधिक है' इस गाथासे जाना जाता है।

शेषका कथन जानकर करना चाहिए।

।। इस प्रकार वर्गणानिरूपणा समाप्त हुई।।

पदेसट्ठदा -- ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदा अणंताणंतपदेसियाओ।।७५९।।

प्रदेशार्थता -- औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं।।७५९।।

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाणं पदेसपरिमाणं पुव्वं चेव आहारवग्गणणिरूवणाए परूविदं। तमेत्थ किमट्ठं वुच्चदे? ओरालियवग्गणापदेसे अस्सिदूण वण्णादिपरूवणं करेमि त्ति जाणावणट्ठं वुच्चदे।

शंका -- औदारिक शरीरकी द्रव्यवर्गणाओंके प्रदेशोंका परिमाण पहले ही आहारवर्गणानिरूपणमें किया है, उसे यहाँ किसलिए कहते हैं?

समाधान -- औदारिक वर्गणाके प्रदेशोंका आश्रय लेकर वर्ण आदिका कथन करते हैं, इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहते हैं।

पंचवण्णाओ।।७६०।।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं।।७६०।।

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ सुक्किल-रुहिर-किण्ण-णील-पीदवण्णजुत्ताओ होंति। कथं एकम्हि परमाणुम्हि पंचण्णं वण्णाणं संभवो? ण, एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि एक्केक्को चेव वण्णपज्जाओ, किंतु ओरालियसरीरवग्गणाए जेण काओचि सुक्किलवण्णाओ काओचि

रुहिरवण्णाओ काओचि णीलवण्णाओ काओचि पीदवण्णाओ काओचि करंबियवण्णाओ, तेणेदाणं पंचवण्णत्तं जुज्जदे। जदि एवं तो ओरालियसरीरवग्गणाए एक्कतीसवण्णभेदा पावेंति। ण, पंचवण्णेहि एयंतेण पुधभूदसंजोगाभावादो।

औदारिक शरीर द्रव्यवर्गणाएँ शुक्ल, लाल, कृष्ण, नील और पीत वर्णसे संयुक्त होती हैं।

शंका -- एक परमाणुमें पाँच वर्ण कैसे होते हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, एक एक परमाणुमें एक एक ही वर्णपर्याय होती है। किन्तु औदारिक शरीर वर्गणाकी चूँकि कुछ वर्गणाएँ शुक्ल वर्णवाली होती हैं, कुछ लाल वर्णवाली होती हैं, कुछ कृष्ण वर्णवाली होती हैं, कुछ नील वर्णवाली होती हैं, कुछ पीत वर्णवाली होती हैं और कुछ मिश्र वर्णवाली होती हैं, इसलिए इनके पाँच वर्ण बन जाते हैं।

शंका -- यदि ऐसा है तो औदारिक शरीर वर्गणाके इकतीस वर्णके भेद प्राप्त होते हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, पाँच वर्णसे संयोगी भेद सर्वथा पृथग्भूत नहीं होते।

पंचरसाओ।।७६१।।

पाँच रसवाली होती हैं।।७६१।।

ओरालियसरीरवग्गणासु तित्त-कडुअ-कसायंबिल-महुरभेदेण पंच रसा होंति। एदे पंच वि रसा एक्केक्कपरमाणुम्हि जुगवं ण होंति, किंतु कमेण होंति। वग्गणासु पुण अक्कमेण कमेण वि होंति, अणंताणंतपरमाणूणं समुदयसमागमेण समुप्पण्णवग्गणासु पंचवण्णाणं व पंचरसाणमक्कमेण वुत्तीए विरोहाभावादो। एत्थ वि एक्कतीसं रसभेदा परूवेदव्वा।

औदारिक वर्गणाओंमें तिक्त, कटुक, कषाय, आम्ल और मधुरके भेदसे पाँच रस होते हैं। ये पाँचों रस एक एक परमाणुमें एक साथ नहीं होते हैं, किन्तु क्रमसे होते हैं। परन्तु वर्गणाओंमें अक्रमसे होते हैं और क्रमसे भी होते हैं। क्योंकि, अनन्तानन्त परमाणुओंके समुदायसमागमसे उत्पन्न हुई वर्गणाओंमें पाँच वर्णोंके समान पाँच रसोंकी अक्रमसे वृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यहाँपर भी एकतीस रसके भेद कहने चाहिए।

विशेषार्थ -- रसके मूल भेद पाँच हैं, इसलिए प्रत्येक भेद पाँच हुए। इन पाँचोंके द्विसंयोगी भेद दस होते हैं। त्रिसंयोगी भेद भी दस होते हैं। चतुःसंयोगी भेद पाँच होते हैं और

पांचसंयोगी भेद एक होता है। इस प्रकार कुल भेद इकतीस होते हैं। पाँच वर्णोंके इकतीस भेद भी इसी प्रकार ले आने चाहिए।

दुगंधाओ।।७६२।।

दो गंधवाली होती हैं।।७६२।।

सुरहिगंधो दुरहिगंधो त्ति बे चेव गंधभेदा संखेवेण। विसेसदो पुण सुरहिगंधो दुरहिगंधो वि अणेयविहो, जाइ-केयइ-णेमालियादिफुल्लेसु अणेयगंधुवलंभादो। एदेहि दोहि गंधेहि ओरालियपरमाणू कमेण संजुत्ता होंति, वग्गणाओ पुण अक्कमक्कमेहि संजुज्जंति, सावयवेसु तदविरोहादो।

सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध इस प्रकार संक्षेपसे गन्धके भंग दो ही हैं। विशेषकी अपेक्षा तो सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध अनेक प्रकारका होता है। क्योंकि, जाति, केतकी और नेमाली आदि फूलोंमें अनेक प्रकारकी गन्ध उपलब्ध होती है। इन दो प्रकारकी गन्धोंसे औदारिक परमाणु क्रमसे संयुक्त होते हैं। परन्तु वर्गणाएँ क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं। क्योंकि, सावयव पदार्थोंमें ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

अट्ठफासाओ।।७६३।।

आठ स्पर्शवाली होती हैं।।७६३।।

कक्कड-मउअ-णिद्ध-लुक्ख-गुरु-लहु-सीदुण्णभेदेण अट्ठ मूलफासा होंति। संजोगेण पुण दुसदपंचवण्णफासभेदा। ते एत्थ ण गहिदा, संगहे असंगहस्स अभावादो। एदेहि अट्ठफासेहि ओरालियवग्गणाओ अक्कमक्कमेहि संजुत्ताओ होंति।

कर्कश, मृदु, स्निग्ध, रूक्ष, गुरु, लघु, शीत और उष्णके भेदसे मूल स्पर्श आठ होते हैं। परन्तु संयोगसे दो सौ पचपन स्पर्शके भेद होते हैं। उनका यहाँपर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, संग्रहमें प्रत्येकका अभाव है। इन आठ स्पर्शोंसे औदारिक शरीर वर्गणाएँ क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ।।७६४।।

वैक्रियिकशरीर द्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं।।७६४।।

पंचवण्णाओ।।७६५।।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं।।७६५।।

पंचरसाओ।।७६६।।

पाँच रसवाली होती हैं।।७६६।।

दुगंधाओ।।७६७।।

दो गन्धवाली होती हैं।।७६७।।

अट्ठफासाओ।।७६८।।

आठ स्पर्शवाली होती हैं।।७६८।।

एदेसिं पंचण्णं सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरस्स पंचसुत्तपरूवणा कदा तहा कायव्वा।

जिस प्रकार औदारिक शरीरके पाँच सूत्रोंका कथन किया है उसी प्रकार इन पाँच सूत्रोंका कथन करना चाहिए।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ।।७६९।।

आहारशरीरवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं।।७६९।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

पंचवण्णाओ।।७७०।।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं।।७७०।।

जदि एदाओ पंचवण्णाओ, आहारसरीरं धवलं चेवे त्ति कथं जुज्जदे? ण, विस्सासुवचयस्स धवलत्तं दट्ठूण तदुवदेसादो।

शंका -- यदि ये पाँच वर्णवाली होती हैं तो आहार शरीर धवल ही होता है यह कैसे बन सकता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयकी धवलताको देखकर वह उपदेश दिया है।

पंचरसाओ।।७७१।।

पाँच रसवाली होती हैं।।७७१।। एत्थ असुहरसाणं संभवे संते आहारसरीरस्स महुरत्तं कथं जुज्जदे? ण, अप्पसत्थरसाणं वग्गणाणं अव्वत्तरसभावेण तत्थ महुररसुवदेसादो।

शंका -- यहाँ अशुभ रसकी सम्भावना होनेपर आहारक शरीर मधुर होता है यह कैसे बन सकता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अप्रशस्त रसवाली वर्गणाओंका अव्यक्त रस होनेसे यहाँ मधुर रसका उपदेश दिया गाया है।

दुगंधाओ।।७७२।।

दो गन्धवाली होती हैं।।७७२।।

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुअंधत्तं पुव्वं व परूवेयव्वं (* म प्रति पाठोऽयम्। ता प्रतौ 'सुअंधत्तं परूवेयव्वं', का प्रतौ 'सुअत्तं परूवेयव्वं' इति पाठः।)।

यहाँपर भी आहारक शरीरका सुगन्धपना पहलेके समान कहना चाहिए।

अट्ठफासाओ।।७७३।।

आठ स्पर्शवाली होती हैं।।७७३।।

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुहफासो पुव्वं परूवेयव्वो। अथवा असुहरसगंधफासवग्गणाओ आहारसरीरागारेण परिणमंतीओ सुहरस-गंध-फासेहि परिणमंति त्ति वत्तव्वं (* ता प्रतौ 'वत्तव्वं' इति स्थाने घेत्तव्वं इति पाठः।)।

यहाँपर भी आहारक शरीरका शुभ स्पर्श पहलेके समान कहना चाहिए। अथवा अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्शवाली वर्गणाएँ आहारक शरीररूपसे परिणमन करती हुई शुभ रस, शुभ गन्ध और शुभ स्पर्शरूपसे परिणमन करती हैं ऐसा यहाँ पर कहना चाहिए।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ।।७७४।।

तैजस शरीरकी द्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं।।७७४।।

पंचवण्णाओ।।७७५।।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं।।७७५।।

पंचरसाओ।।७७६।।

पाँच रसवाली होती हैं।।७७६।।

दोगंधाओ।।७७७।।

दो गन्धवाली होती हैं।।७७७।।

सुगममेदं सुत्तचउक्कं।

ये चार सूत्र सुगम हैं।

चदुफासाओ ।।७७८।।

चार स्पर्शवाली होती हैं।।७७८।।

णिद्ध-ल्हुक्खाणमेक्कदरो सीदुण्हाणमेक्कदरो कक्कड-मउआणमेक्कदरो गरुअ-लहुआणमेक्कदरो फासो (* ता प्रतौ '-- मेक्कदरो फासो' इति पाठः।)। एदम्मि खंधे पडिवक्खफासो ण होदि त्ति कुदो णव्वदे? चत्तारि फासा त्ति णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो।

स्निग्ध और रूक्षमेंसे कोई एक, शीत और उष्णमेंसे कोई एक, कर्कश और मृदुमेंसे कोई एक तथा गुरु और लघुमेंसे कोई एक स्पर्श होता है।

शंका -- इस स्कन्धमें प्रतिपक्ष स्पर्श नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान ‍ इ सूत्रमें चार स्पर्शोंका निर्देश अन्यथा नहीं बन सकता है, इससे जाना जाता है।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ।।७७९।।

भाषाद्रव्यवर्गणाएँ, मनोद्रव्यवर्गणाएँ और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं।।७७९।।

पंचवण्णाओ।।७८०।।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं।।७८०।।

पंचरसाओ।।७८१।।

पाँच रसवाली होती हैं।।७८१।।

दुगंधाओ।।७८२।।

दो गन्धवाली होती हैं।।७८२।।

चदुफासाओ।।७८३।।

चार स्पर्शवाली होती हैं।।७८३।।

एदेसिं पंचण्णं सुत्ताणमत्थो जहा तेजासरीरस्स पंचण्णं सुत्ताणं परूविदो तहा परूवेयव्वो।

।। एवं पदेसट्ठदा समत्ता।।

तैजस शरीरके पाँच सूत्रोंका अर्थ जिस प्रकार कहा है, उस प्रकार इन पाँच सूत्रोंका अर्थ कहना चाहिए।

।। इस प्रकार प्रदेशार्थता समाप्त हुई।।

अप्पाबहुगं दुविहं -- पदेसप्पाबहुअं चेव ओगाहणअप्पाबहुअं चेव।।७८४।।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है -- प्रदेश अल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व।।७८४।।

पुव्वं बाहिरवग्गणाए पंचसरीरागारेण परिणदपोग्गलाणमप्पाबहुगं परूविदं। संपहि पंचण्णं सरीराणं वग्गणाणं (* ता प्रतौ 'सरीराणं च वग्गणाणं' इति पाठः।) पदेसस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठं पदेसप्पाबहुगमागदं पंचसरीरपाओग्गवग्गणाणं पि थोवबहुत्तमब्भंतरवग्गणाए परूविदं ति एत्थ पदेसअप्पाबहुए ण कज्जमिदि वोत्तुं ण जुत्तं, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्गवग्गणाणं थोवबहुत्तस्स तत्थ परूवणाभावादो। पंचण्णं सरीराणमोगाहणप्पाबहुअं वेयणखेत्तविहाणे परूविदं त्ति एत्थ ण परूविज्जदे। किंतु पंचण्णं सरीराणं पाओग्गवग्गणाणमोगाहणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमोगाहणअप्पाबहुअमागयं।

पहले बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीररूपसे परिणत हुए पुद्‌गलोंका अल्पबहुत्व कहा है। अब पाँच शरीरोंकी वर्गणाओंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए प्रदेश अल्पबहुत्व आया है। पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंका भी अल्पबहुत्व आभ्यन्तर वर्गणा अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए यहाँपर प्रदेश अल्पबहुत्वसे कोई प्रयोजन नहीं है ऐसा कहना योग्य नहीं है, क्योंकि, औदारिक शरीर, वैक्रियिक शरीर और आहारक शरीरके योग्य वर्गणाओंके अल्पबहुत्वका वहाँपर कथन नहीं किया है। पाँच शरीरोंकी अवगाहनाका अल्पबहुत्व वेदनाक्षेत्रविधान अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए उसका यहाँपर कथन नहीं करते हैं, किन्तु पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंकी अवगाहनाओंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवगाहना अल्पबहुत्व यहाँपर आया है।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए।।७८५।।

प्रदेशअल्पबहुत्व -- औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं।।७८५।।

एदमप्पाबहुअं जोगेणागच्छमाणएगसमयपबद्धवग्गणाणं परूविदं ण सव्ववग्गणाणं। कुदो एदं णव्वदे? आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गेण पदेसग्गेण च तेजासरीरवग्गणादो अणंतगुणाए तत्तो अणंतगुणहीणत्तविरोहादो। तेण एगेण जोगेण आगच्छमाणओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसग्गेण वग्गणग्गेण च (* ता प्रतौ 'वग्गणेण च' इति पाठः।) थोवाओ त्ति भणिदं। आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गे असंखेज्जे खंडे कदे तत्थ बहुभागा आहारवग्गणाए वग्गणग्गं होदि, सेसे असंखेज्जे खंडे कदे बहुभागा वेउव्वियसरीरपाओग्गवग्गणग्गं होदि। सेसेगभागो ओरालियसरीरपाओग्गवग्गणग्गं होदि। तेण थोववग्गणाहिंतो थोवाओ चेव आगच्छंति त्ति ओरालियसरीरवग्गणाणं थोवत्तं भणिदं त्ति के वि भणंति। एसो अत्थो ण भल्लयो, तेजासरीरवग्गणादिसु एदस्स अत्थस्स पवुत्तीए अदंसणादो। तेण पुव्विल्लत्थो चेव घेत्तव्वो।

यह अल्पबहुत्व योगसे आनेवाले एक समयप्रबद्धकी वर्गणाओंका कहा है, सब वर्गणाओंका नहीं।

शंका -- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- वर्गणाग्र और प्रदेशाग्रकी अपेक्षा तैजस शरीर वर्गणासे आहार वर्गणा अनन्तगुणी होती है। उससे अनन्तगुणी हीन होनेमें विरोध आता है। इसलिए एक योगसे आनेवाली औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशाग्र और वर्गणाग्रकी अपेक्षा स्तोक हैं यह कहा है।

आहार वर्गणाग्रके असंख्यात खण्ड करनेपर वहाँ बहुभागप्रमाण आहारक शरीर प्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। शेषके असंख्यात खण्ड करनेपर बहुभागप्रमाण वैक्रियिक शरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। तथा शेष एक भागप्रमाण औदारिक शरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र होता है, इसलिए स्तोक वर्गणाओंमेंसे स्तोक ही आते हैं, इसलिए औदारिक शरीरवर्गणाएँ स्तोक कही हैं ऐसा कितने ही आचार्य कथन करते हैं, किन्तु यह अर्थ

भला नहीं है, क्योंकि, तैजस शरीर वर्गणा आदिमें इस अर्थकी प्रवृत्ति नहीं देखी जाती, इसलिए पहलेका अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ।।७८६ ।।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ।।७८६ ।।

जेण जोगेण ओरालियसरीरट्ठमाहारवग्गणादो ओरालिय० वग्गणाओ एगसमएणागमणपाओग्गाओ ताहिंतो तत्तो तम्हि चेव समए अण्णस्स जीवस्स तेणेव जोगेण वेउव्वियसरीरट्ठमागमणपाओग्गाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो? साभावियादो। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो।

जिस योगसे औदारिकशरीरके लिए आहारवर्गणाओंमेंसे औदारिकशरीरवर्गणाएँ एक समयमें आगमनप्रायोग्य होती हैं उन्हीं वर्गणाओंमेंसे उसी समयमें अन्य जीवके उसी योगसे वैक्रियिक शरीरके लिए आगमनयोग्य वर्गणाएँ असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ।।७८७ ।।

आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ।।७८७ ।।

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण आहारवग्गणादो आहारसरीरदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो (* ता प्रतौ 'असंखे गुणाओ? (मणदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ) कुदो' इति पाठः। तथा का प्रतौ कृतसंशोधनमवलोक्य म प्रतावपि 'असंखेज्जगुणाओ मणदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो' इति पाठः प्रतिभाति।) साभावियादो। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो।

उसी समयमें उसी योगसे आहारवर्गणामेंसे आनेवाली आहारकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ।।७८८ ।।

तैजसशरीरद्रववर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ।।७८८ ।।

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण तेजासरीरदव्ववग्गणादो तेजासरीरट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। कुदो? साभावियादो। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

उसी समयमें उसी योगके द्वारा तैजसशरीरवर्गणाओंमेंसे तैजस शरीरके लिए आनेवाली वर्गणाएँ प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ।।७८९।।

भाषाद्रव्यवर्गणाएँ, मनोद्रव्यवर्गणाएँ और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं।।७८९।।

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण भासावग्गणादो भासापज्जाएण परिणममाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण मणदव्ववग्गणादो दव्वमणट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण कम्मइयदव्ववग्गणादो अट्ठण्णं कम्माणमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। सव्वत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

।। एवं पदेसप्पाबहुअं समत्तं।।

उसी समयमें उसी योगसे भाषावर्गणाओंमेंसे भाषारूप पर्यायसे परिणमन करनेवाली वर्गणाएँ प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। उसी समयमें उसी योगसे मनोद्रव्यवर्गणाओंमेंसे द्रव्यमनके लिए आनेवाली वर्गणाएँ प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं।

उसी समयमें उसी योगसे कार्मणद्रव्यवर्गणाओंमेंसे आठों कर्मोंके लिए आनेवाली वर्गणाएँ प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। सर्वत्र गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता है।

।। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।।

ओगाहणअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए।।७९०।।

अवगाहना अल्पबहुत्व -- कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं।।७९०।।

कुदो? एगम्हि घणंगुले अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगकम्मइयवग्गणाए ओगाहणुप्पत्तीदो।

क्योंकि, एक घनांगुलमें असंख्यातवें भागका भाग देनेपर कार्मणवर्गणाकी अवगाहना उत्पन्न होती है।

मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए (* ता प्रतौ '-- वग्गणाए (ओ)ओगाहणाए', का प्रतौ '-- वग्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः।) असंखेज्जगुणाओ।।७९१।।

मनोद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।।७९१।।

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। घणंगुलभागहारादो असंखेज्जगुणहीणा कथमणंतगुणहीणवग्गणाणमोगाहणा असंखेज्जगुणा होज्ज? ण एस दोसो, घणागारेण ट्ठिदलोहगोलियाए ओगाहणादो थोवपदेसस्स फेणपुंजस्स ओगाहणाए बहुत्तुवलंभादो। एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं।

गुणकार क्या है? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका -- अनन्तगुणी हीन वर्गणाओंकी घनांगुलके भागहारसे असंख्यातगुणी हीन अवगाहना असंख्यातगुणी कैसे हो सकती है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, घनाकाररूपसे स्थित लोहकी गोलाकी अवगाहनासे स्तोक प्रदेशवाले फेनपुंजकी अवगाहना बहुत उपलब्ध होती है।

यह अर्थपद ऊपर सर्वत्र कहना चाहिए।

भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज(* ता प्रतौ '-- वग्गणाए (ओ) ओगाहणाओ (ए) असंखेज्ज--' इति पाठः।) गुणाओ।।७९२।।

भाषाद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।।७९२।।

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो।

गुणकार क्या है? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए (* का प्रतौ '-- वग्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः।) असंखेज्जगुणाओ।।७९३।।

तेजाशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।।७९३।।

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो एसो णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो।

गुणकार क्या है? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका -- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ (* ता प्रतौ 'ओगाहणाओ (ए) असंखेज्जगुणाओ' इति पाठः।)।।७९४।।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।।७९४।।

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो।

गुणकार क्या है? अंगुलके असंख्यादवें भागप्रमाण गुणकार है।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ।।७९५।।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।।७९५।।

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो।

गुणकार क्या है? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ।।७९६।।

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।।७९६।।

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो।

गुणकार क्या है? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

।। एवमोगाहणप्पाबहुए समत्ते बंधणिज्जं (* का प्रतौ '-- णप्पाबहुएसु वुत्ते बंधणिज्जं' इति पाठः।) समत्तं होदि।।

।। इस प्रकार अवगाहना अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर बन्धनीय अनुयोगद्वार समाप्त होता है।।

जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं -- पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि ।।७९७।।

जो बन्धविधान है वह चार प्रकारका है -- प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध ।।७९७।।

एदेसिं चदुण्णं बंधाणं विहाणं भूदबलिभडारएण महाबंधे सप्पवंचेण लिहिदं त्ति अम्हेहि एत्थ ण लिहिदं। तदो सयले महाबंधे एत्थ परूविदे बंधविहाणं समप्पदि।

इन चारों बन्धोंका विधान भूतबली भट्टारकने महाबन्धमें विस्तारके साथ लिखा है, इसलिए हमने यहाँपर नहीं लिखा है। इसलिए सकल महाबन्धके यहाँपर न कथन करनेपर बन्धविधान समाप्त होता है।